RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-03
Issue-11
November -2018

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com [UGC Listed Journal]

महात्मा गाँधीजी के जीवन–दर्शन, स्थानीय स्वशासन तथा सर्वोदयी उत्थान के संदर्भ में अन्तर्निहित विचारो का विश्लेषणात्मक अध्ययन

मु0 जाबेद

रिसर्च स्कॉलर (यू0जी0सी0 नेट उत्तीर्ण) विभाग, राजनीति विज्ञान एस0 के0 एम0 विश्वविद्यालय, दुमका

**आप मुझे जंजीरों में जकड़ सकते है, यातना दे सकते है,
यहॉ तक की आप इस शरीर को नष्ट कर सकते है,
लेकिन आप कभी मेरे विचारों को कैद नहीं कर सकते।**

.गाँधी जी

युग दृष्टा, महान मनीषी, व्यवहारिक एवं आध्यात्मिक राजनीतिज्ञ जिसने जीवनपर्यन्त सत्य और अहिंसा के सिंदान्तो पर चलते हुए विश्व समुदाय को यह संदेश दिया कि अगर साधन अनुचित है, तो साध्य कमी उचित हो ही नहीं सकता। जब हमारा विश्व एक भीषण त्रासदी के दौर से गुजर रहा था और चारों तरफ धन–बल, अंहकार, शक्ति की असीम लालसा लिए सतालोलूप तानाशाहो के हिंसक प्रवृतियों के बीच अपनी अहिंसात्मक विचारों को अन्तर्राष्टीय पटल पर रखने वाला एकमात्र व्यक्तित्व गांधी जी ही थे।

गाँधी जी का जन्म 2 अक्टूबर 1969 में वर्तमान गुजरात के काठियावाड़ में पोरबंदर नामक स्थान पर एक धार्मिक विचारधारा वाले वैष्णव कुल में हुआ था। इनके पिता करमचंद गाँधी पोरबंदर राज्य के प्रधान थे और इनकी सदाचारिता एवं निष्पक्षता की बड़ी धाक थी। इनकी माता पुतलीबाई एक साधु प्रवृति की अत्यंत धार्मिक महिला थी, जिनकी धर्म निष्ठा का प्रभाव गांधी जी पर पड़ा। 1887 में मैट्रिक परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद अगले वर्ष यह बैरिस्टरी के अध्ययन के लिए लंदन गए। विलायत जाने के पूर्व माताजी के सम्मुख इन्होंने शपथ ली कि ''मैं तीन वस्तुओं–मघ, मांस तथा नारी का सेवन नहीं करूँगा। विलायत में इस शपथ ने, सत्यनिष्ठा ने, सादे जीवन तथा आस्तिकता ने सभी प्रकार के प्रलोभनों से इनकी रक्षा की। यहाँ रहते हुए इन्होंने बाइबिल का अध्ययन किया ''न्यू टेस्टामेंट'' में अंहिसा का प्रतिपादन करते हुए ईसा द्वारा ''पर्वत पर दिए प्रवचन'' का इनपर बेहद प्रभाव पड़ा।

गीता का परिचय इन्हें सर्वप्रथम एडविन अर्नाल्ड के इस ग्रन्थ के अनुवादक ''स्वर्गीय संगीत'' से मिला। गांधी जी इस पर मुग्ध हो गये और गीता को अपने जीवन की मार्गदर्शिका बना लिया।''

सम्बल व्यापारी अब्दुल्ला की और से केस के लिए इन्हें दक्षिण अफ्रिका जाना पड़ा। गांधी जी ने 1904 से जुलाई 1914 तक सत्याग्रह दक्षिण अफ्रिका में किया।

भारत में 25 मार्च 1915 को साबरमती के किनारे गांधी जी ने आश्रम की स्थापना की। तथा 1916, में कांग्रेस में प्रवेश किया, 13 अप्रैल 1919 को जलियावाला बाग में ब्रिटिश साम्राजवादियों द्वारा निर्दोष निहत्थे लोगों पर बर्बरतापूर्ण गोली वर्षा के विरोधस्वरूप सर की उपाधि लोटाते हुए रॉलेट एक्ट विरोधी सत्याग्रह प्रारंभ किया।

सितम्बर 1931 में गांधी जी ने दूसरे गोलमेज सम्मेलन में कांग्रेस के एकमात्र प्रतिनिधि के रूप में भाग लिया तथा 1932 में सविनय अवज्ञा आंदोलन पुनः प्रारंभ किया।

1942 में भारत छोड़ो आंदोलन में गांधी जी अग्रणी भूमिका में थे, 30 जनवरी 1948 को प्रार्थना सभा में जाते समय नाथूराम गोडसें की गोलियो का शिकार होकर स्वर्गवासी हुए। विश्वविख्यात लेखिका एस0पर्लबक की नन्ही बेटी ने जब गॉधीजी की हत्या का समाचार पाया तो हठात् उसके मुख से निकल पड़ा था ''माँ, कितना अच्छा होता यदि पिस्तौल की ईजाद नहीं होती''।

गांधी जी की मृत्यु पर तत्कालीन प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू का कहना था कि ''हमारे जीवन से रोशनी छिन गयी है, हर और अंधकार ही अंधकार है।''

वल्लभभाई पटेल लिखते है – ''गांधी जी शक्ति के स्तुप और राष्ट्र की प्रेरणा के स्त्रोत थे।''

मार्टिन लूथर किंग (जू0) के शब्दो में :–

''दुनिया गांधी जैसे व्यक्तियों को पसंद नहीं करती। यह ताज्जूब की बात है, लोगों ने ईसा–मसीह और लिंकन को भी पसंद नहीं किया। लोगों ने इन्हें भी मार डाला। उन्होंने उस व्यक्ति को मार डाला जिन्होंने हिन्दुस्तान के लिए क्या कुछ नहीं किया, यहॉ तक की अपनी जिन्दगी उन्हें दे दी। गांधी ने लाखो–लाख लोगों को प्रेरित कर आजादी की जद्धोजहद के लिए तैयार किया।''

जिस व्यक्ति ने गांधी को गोली मारी उसने तो मानवता को गोली मारी। लिंकन तथा गांधी को एक ही कारण गोली खानी पड़ी–यानि ''विभाजित राष्ट की एकता का प्रयास''।

जब लिंकन को गोली मारी गयी थी तो उनके सचिव ने बगल में खड़े होकर कहा था ''अब यह युगो–युगो के हो गये''। गांधी के संदर्भ में भी यही कहा जा सकता है।''

गांधी जी का मानना था कि प्रत्येक देश की अर्थव्यवस्था वहॉ की जलवायु, भूमि तथा वहॉ के निवासियो के स्वभाव को ध्यान में रखते हुए निश्चित की जानी चाहिए और इन बातों के आधार पर जहॉ तक भारत का संबंध है, भारत के लिए कुटीर उधोग–धंधो की व्यवस्था ही सर्वोत्तम हैं।

हमारी आबादी का 75% से ज्यादा हिस्सा कृषिजीवी है, लेकिन यदि हम उनसे उनकी मेहनत का सारा फल खुद छीन ले या दूसरों को छीन लेने दे तो यह नहीं कहा जा सकता है कि हममें स्वराज्य की भावना काफी मात्रा में हैं।

RRIJM 2015, All Rights Reserved

यंग इंडिया में गाँधी जी लिखते है कि ''शहर अपनी हिफाजत कर सकते है,'' हमे तो अपना ध्यान गॉवों की तरफ लगाना चाहिए। हमें उन्हें उनकी संकुचित दृष्टि, उनके पूर्वाग्रहो और वहमों आदि से मुक्त करना है, और इसे करने के सिवा और कोई दूसरा तरीका नहीं है। कि हम उनके साथ उनके बीच में रहे, उनके सुख–दुःख में हिस्सा ले। तथा उनके शिक्षा तथा उपयोगी ज्ञान का प्राचार करें।

गाँधी जी मार्क्स तथा बाकुनिन की तरह अराजक्तवादी नहीं बल्कि क्रॉपोटकिन, थोरो की तरह दार्शनिक अराजकतावादी है, जो राज्य की समाप्ति चाहते है, इनका मानना था कि राज्य हिंसा व असत्य पर आधारित है, तथा व्यक्तिगत अधिकारो का हनन करता है, इसलिए बेहतर समाज के लिए राज्य विहीनता आवश्यक है।

राजनीति के बारे में कहा जाता है कि यह दुष्टो के हाथो का करतब (ए गेम ऑफ स्काउण्ड्रल) है, इसी को गांधी जी ने गरिमामय बना दिया। सारी दुनिया चमत्कृत रह गयी थी कि एक दुबले पतले इंसान ने बिना किसी भौतिक बल के उस सत्ता के जुए से देश को मुक्त कर दिया जिसके पास सब प्रकार का पाश्विक बल था।

गाँधी जी का आदर्श, अराजक लोकतंत्रीय समाज सत्याग्रहो के सिंदान्तो का पालन करने वाले व्यक्तियों के स्वावलंबी ग्रामीण समुदायों का संघ है। इस समाज का निर्माण विकेन्द्रीकरण पर तथा स्वेच्छापूर्ण सहयोग के आधार पर होगा। सब व्यक्तियों के समान अधिकार होगें, और सबको अपनी योग्यतानुसार समाज की सेवा करने का अवसर दिया जाएगा, उस समाज में सभी व्यक्तियों के लिए शारीरिक श्रम आवश्यक होगा। गांधी जी यद्यपि मशीनो के प्रयोग के विरोधी नहीं थे, तो भी वे अहिंसक समाज का आधार लघु ग्रामोउधोग और कुटीर उधोग को मानते थे, इसका कारण यह यह है कि मशीनो से उत्पादन किए जाने पर हाथ से काम करने वालों की संख्या कम हो जाएगी तथा देश की बेकारी में भीषण वृद्धि होगी।

गांधी जी का मानना था कि व्यक्ति राज्य के लिए नहीं, अपितु राज्य व्यक्ति के लिए है। राज्य का प्रधान कार्य सभी व्यक्तियों के अधिकतम हित का सम्पादन करना है। इसका लक्ष्य सर्वोदय अर्थात ''सभी व्यक्तियों का कल्याण है।''

गांधी जी व्यक्ति को प्रधानता देते थे, परंतु उसका यह अभिप्राय नहीं कि ये बैंथम, मिल आदि पश्चिमी विचारकों के व्यक्तिवाद में विश्वास रखते थे, इनका व्यवक्तिवाद पश्चिम के व्यक्तिवाद की भॉति पूँजिवाद या व्यक्तिगत स्वार्थ का समर्थन नहीं करता था। ये संपत्ति का वितरण लोगों की आवश्यकतानुसार करना चाहते थे, किन्तु यह कार्य राज्य की और से जोर जबरदस्ती न होकर व्यक्तियों के हृदय परिवर्तन से होना चाहिए। उससे अतिरिक्त ये व्यक्ति के अधिकारों के साथ–साथ उसके कर्त्तव्यों पर बहुत अधिक बल देते थे।

गांधीजी राजनीतिक और आर्थिक क्षेत्र में शक्ति तथा धन के केन्द्र को सब बुराईयों का जड़ मानते थे। तथा ये स्थानीय स्वशासन (विकेन्द्रीकरण) पर अधिक जोर देते थे। इनके अनुसार विकेन्द्रीकरण के दो कारण थे वर्तमान राज्यों के अधिकारों में निरंतर वृद्धि होने से शक्ति का केन्द्रीकरण हो रहा है, अतः हिंसा को कम करने के लिए आवश्यक है कि राजनीतिक क्षेत्र में केन्द्रीकरण की प्रवृति को कम किया जाए। आर्थिक क्षेत्र में भी यही स्थिति है। अतः बड़े पैमाने पर चलने वाले उधोगों को समाप्त करके। लघु ग्रामोउधोग को प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए।

विकेन्द्रीकरण के द्वारा व्यक्ति के विकास में बाधा डालने वाले दुष्परिणामो का उत्पन्न होना है, राज्य में व्यक्तियों का अधिकार केन्द्रीकरण स्थानीय स्वशासन की मात्रा को कम करता है, व्यक्ति पर विभिन्न प्रकार के अंकुश और नियंत्रण लगाता है व्यक्ति के मानसिक, नैतिक और आध्यात्मिक विकास में बाधा डालता है, अतः गांधी जी लास्की एवं कोल जैसे विचारको की भांति आधुनिक राज्यों में विकेन्द्रीकरण की आवश्यकता समझते थें।

गांधी जी के विकेन्द्रीकरण का अभिप्राय यह है कि ग्राम पंचायतो को अपने गॉवो का प्रबंध और प्रशासन करने का सब अधिकार दे दिये जाए इनके मामले में राष्ट्रीय अथवा प्रांतीय सरकारो का हस्तक्षेप और नियंत्रण बहुत कम हो जाए। सभी गॉव आर्थिक दृष्टि से स्वशासन का अधिकार रखने वाले हो। इन्होंने स्वावलंबी गांवो का सुंदर चित्र उपस्थित करते हुए लिखते है कि :–

''मेरे ग्राम स्वराज्य का आदर्श यह है कि प्रत्येक गांव में एक पूर्ण स्वराज्य हो, अपनी आवश्यकता की वस्तुओं के लिए वह अपनी पड़ोसियों पर निर्भर न रहे। इस प्रकार प्रत्येक गांवो का पहला काम होगा, खाने के लिए अन्न और कपड़ो के लिए रूई की फसलो को उत्पन्न करना गांव की अपनी नाट्यशाला, सार्वजनिक भवन व पाठशालाएँ भी होगी। नैतिक शिक्षा अंतिम कक्षा तक अनिवार्य होगी। यथासंभव प्रत्येक कार्य सहकारिता के आधार पर किया जाएगा। ग्राम का शासन पॉच व्यक्तियों की पंचायत द्वारा संचालित होगा, पंचायत ही गांव की व्यवस्थापिका सभा, कार्यकारिणी सरकार एवं न्यायपालिका सभी कुछ होगी। आर्थिक क्षेत्र में विकेन्द्रीकरण का स्वरूप कुटीर उधोगो की स्थापना के रूप में सामने आयेगा।

आधुनिक भारतीय जीवन और सोच पर सर्वाधिक प्रभाव महात्मा गांधी के विचारो का पड़ा, क्योंकि उनका तत्व–चिंतन केवल वैचारिक न होकर प्रत्यक्ष अनुभूति तथा प्रयोग पर आधारित था। महात्मा गांधी के विचारो और कार्यो पर भारतीय चिंतन विशेषतः उपनिषदो का तो प्रभाव पड़ा ही साथ ही रस्किन, टालस्टाय, थोरो जैसे विद्वानो के सामाजिक आर्थिक दृष्टिकोण का भी प्रभाव पड़ा। इन सबका समन्वित रूप गांधी जी का सर्वोदय दर्शन है, जिसके केन्द्र बिन्दु व्यक्ति से बढ़कर समष्टि तक हो गया है लक्ष्य है आत्मोदय के साथ–साथ सबका उदय।

गांधी जी पर भारतीय दार्शनिक परंपरा का अत्यधिक प्रभाव था। इस महान परंपरा में दो श्रेष्ठ तत्वो सत्य और अहिंसा को गांधी जी ने अपने संपूर्ण विचारो के केन्द्र में रखा।

गांधी जी कहते थे ''मनुष्य जबतक स्वेच्छा से अपने को अपने पीछे न रखे–सबसे छोटा न माने तब तक उसकी मुक्ति नहीं हैं। अहिंसा नम्रता की पराकाष्ठा है और नम्रता के बिना मुक्ति किसी काल में भी नहीं है।''

गांधी जी ने सत्य को अपनी आस्था के मूल केन्द्र में बताते हुए कहा ''मेरे लिए सत्य सर्वोच्च सिंद्धान्त है, जिसमें अन्य सिंद्धान्त भी अन्तरभूत हो जाते है। यह सत्यवाणी की सत्यता ही नहीं ब्लकि विचारो की सत्यता है और यह केवल हमारी मान्यता संबंधी सत्य ही नहीं बल्कि परम, सनातन सिंद्धान्त अर्थात ईश्वर है। गांधी जी ने सत्य को सर्वदा हितकर शक्ति मानते हुए कहा ''मृत्य के बीच जीवन जागता है और अंधकार के बीच प्रकाश जागता है। अतः मेरा निष्कर्ष है कि ईश्वर जीवन है, सत्य है, ज्योति है वह प्रेम है वह परमेश्वर है।''

RRIJM 2015, All Rights Reserved

गांधी जी के अनुसार सत्य तथा ईश्वर एक दूसरे के पर्याय् है, ईश्वर प्राप्ति का साधन अहिंसा है। अहिंसा वह यांत्रिक आधार है, जिसके अन्य मानवीय गुण विकसित होते है।

गांधी जी का कहना था कि ''मैं स्वराज्य के लिए सत्य का सौदा नहीं कर सकता'' गांधी जी की राजनीतिक धारणाओ का मूल आधार सर्वोदय है, सर्वोदय का तात्पर्य है, प्रत्येक व्यक्ति को अपने व्यक्तित्व के विकास का पूरा अवसर मिले। इनका लक्ष्य समाज में ऐसी व्यवस्था को कायम करना था जिससे प्रत्येक व्यक्ति को अपने उत्थान का समान अवसर एवं सुविधाएँ प्राप्त हो। ऐसे समाज को सर्वोदय समाज नाम देना उचित होगा।''

गांधीजी ने केवल समाज को ही नहीं वरन् व्यक्ति को भी अपने चिंतन का विषय बनाया। इन्होंने जीवन को उसकी संपूर्णता में ग्रहण किया है। इनका विश्वास था कि व्यक्ति के पुनर्निर्माण के बिना समाज का पुनर्निर्माण असंभव है।

अहिंसा को धर्म के रूप में चरितार्थ करना गांधी दर्शन की नैतिकता और मौलिकता है, गांधी जी ने सत्य को साध्य और अहिंसा को उसका साधन माना इनके लिए ये दोनों एक ही सिक्के के दो पहलू है, सत्य और अहिंसा के साथ और भी तत्व सम्पृक्त हुए और इस प्रकार गांधी जी का समग्र दर्शन प्रस्कुटित हुआ।

कहावत है कि नदी का उद्गम निर्मल होता है, तो उससे निकलने वाली जलधाराएँ भी निर्मल होती है, उसी प्रकार जहाँ मूल में सत्य होता है, तो उससे निःसृत सभी कर्मधाराएँ सत्यमय होती है।

अतएव ऐसी स्थिति में महात्मा गांधी के दर्शन का भली–भांति अध्ययन उनके जीवन परिचय की पृष्टभूमि में ही किया जा सकता है।

गांधी जी का देशभक्तो की पंक्ति में सबसे उंचा स्थान है, इनकी देशभक्ति मंजिल नहीं, अनंत शान्ति तथा जीवन मात्र के प्रति प्रेमभाव की मंजिल तक पहुँचने के लिए यात्रा का एक पड़ाव मात्र है। इनके अनुसार ''जिस सत्य की सर्वव्यापक, विश्व भावना को अपनी आँख से प्रत्यक्ष देखना हों उसे निम्नतम प्राणी से आत्मावत प्रेम करना चाहिए, जीव मात्र के प्रति समदृष्टि से सत्य, अहिंसा एवं प्रेम की त्रिवेणी प्रवाहित होती है। गांधी जी लिखते है ''लाखो करोड़ो गूंगो के हृदय में जो ईश्वर विराजमान हैं, मैं उसके सिवा किसी अन्य ईश्वर को नहीं मानता। वे उसकी सत्ता को नहीं जानते मैं जानता हूँ, मैं इन लाखों करोड़ो की सेवा द्वारा उस ईश्वर की पूजा करता हूँ जो सत्य है अथवा उस सत्य की जो ईश्वर है।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का व्यक्तित्व कृतित्व आदर्शवादी रहा है, इनका आचरण प्रयोजनवादी विचारधारा से ओतप्रोत रहा है।

लुई फिशर (मशहूर अमेरीकी पत्रकार) लिखते है – ''उस अंग्रेज के बातो को यह मालूम रहता कि वह जिसे ट्रेन से फैंक रहा है, वही एक दिन अंग्रेजी हूकूमत को ग्लोब से बाहर फेंक देगा, तो यह ऐसी गलती कभी नहीं करता।''

गांधि जी ने स्वंय कहा था – '' गांधीवाद जैसे कोई वाद नहीं है अगर कोई गांधीवादी है तो वह मैं अकेला हूँ।''

गांधी जी के एकादश व्रतो को मिलाकर गांधी जी का जीवन दर्शन मूर्तीमान होता है, वह सत्य के प्रयोगो का पुनीत प्रवाह है। मानव जीवन की श्रेष्ठता को वह सिद्व करता है। शास्त्रो में कहा गया ''न मानवात् श्रेष्ठतरंहि किंचित'' मानव से श्रेष्ठ और कुछ भी नहीं हैं इस रूप में गांधी जी महामानव हुए और उसने सर्व धर्म समभाव के रूप में मानव धर्म को ही महत्व दिया हैं।

गांधी जी नवजीवन में लिखते है ''भारत का भविष्य पश्चिम के उस रक्त रंजित मार्ग पर नहीं है जिस पर चलते चलते पश्चिम अब खुद थक गया है। भारत का भविष्य तो सरल, आर्थिक जीवन द्वारा प्राप्त शांति के अहिंसक रास्ते पर चलने में ही हैं।''

गांधी जी लिखते हैं –जैसे पानी का स्वभाव ही नीचे जाने का है, ऐसे ही जो स्वभाव से नम्र है उनकी नम्रता पानी सी जगत को लाभदायक है। मैं दूसरो को अपना जीवन दर्शन समझाने के सर्वथा अयोग्य हूँ मैं तो केवल उस दर्शन को जिसमें विश्वास रखता हूँ, व्यवहार में लाने की योग्यता रखता हूँ। गांधी जी के शब्दों में जब भी मुझे निराशा होती है, तो गीता मेरा सहारा बनती है। गांधी जी ने गीता को एक निर्दोषपूर्ण, आचार संहिता माना है।

अमरीकी विदेश मंत्री जार्ज मार्शल का कहना है–''गांधी जी समस्त मानवीय चेतना के प्रवक्ता है।''

सी0ई0एम0 जोड का कहना है–''गांधी एक तिहाई राजनीतिक, एक तिहाई महात्मा और एक तिहाई मनुष्य है।''

गांधी जी ने अपने राजनीतिक गुरू गोखले के बारे में कहा था – ''भारतवर्ष के तूफानी समुद्र में कूदते हुए मुझे एक कर्णधार की आवश्यकता थी और गोखले सरीखे कर्णधार के नीचे में सुरक्षित था।''

गांधी जी लिखते हैं – सत्य को मैंने जैसा देखा है, जिस मार्ग से देखा है, उसे बताने का मैने सतत् प्रयत्न किया है, सत्यमय होने के लिए अहिंसा ही एकमात्र मार्ग है। जो कहता है, धर्म का राननीति से संबंध नहीं है वह धर्म को जानता ही नहीं है, यह कहने से मुझे कोई संकोच नहीं, यह कहने में कोई अविनय नहीं करता। गाँधी जी के निधन पर महान वैज्ञानिक आइंस्टीन ने कहा था आगे आनेवाली पीढ़ियाँ शायद ही यह विश्वास कर सकेगी कि इन जैसे हाड़–मांस का पुतला कभी इस भूमि पर पैदा हुआ था।

राधा कृष्णन के शब्दों में ''वे युद्ध से विहल विश्व को शांति प्रदान करने वाली नैतिक और आध्यात्मिक शांति को सम्पन्न करने वाले पुरूष थे।''

गांधी जी के मौलिक दार्शनिक सिंदान्त, सत्य, अहिंसा, अस्तेय (चोरी न करना) ब्राध्मचर्य एवं अपरिग्रह (आवश्यकता से अधिक संपत्ति इकट्ठा न करना) पर टिका है।

गाधी जी समझते थे कि इन साधनों के पालन से चरित्र उत्तरोत्तर निर्मल होता चला जाता है, वह सत्य को ग्रहण करने में अधिक समर्थ हो जाता है और सत्य का संपूर्ण दर्शन अहिंसा के पालन के बाद ही हो सकता है।

सत्य ही परमात्मा है और परमात्मा ही सत्य है। सत्य वही होता है जिनकी सत्ता होती है और जो सदा टिका रहता है, गांधी जी अपने जीवन का ध्येय सत्य की शोध करना समझते थें इसी कारण उन्होंने अपनी आत्मकथा का नाम ही ''मेरे सत्य के साथ प्रयोग रखा।''

गांधी जी सत्य और अहिंसा को परिभाषित करते हुए कहते है कि ''यह बड़ा कठिन प्रश्न है किन्तु स्वंय अपने लिए इसका

RRIJM 2015, All Rights Reserved

समाधान कर लिया है। तुम्हारी अंतरात्मा जो कहती है वहीं सत्य है, किन्तु सबका अंत करण एक जैसी बात नहीं कहता। दुष्टों की अंतरात्मा बुरी बातो को सत्य कहती हैं अतः सत्य के लिए अंतरात्मा की शुद्धि आवश्यक है।

अहिंसा का आधार अद्वैत की भावना है, यह मार्क्स के दंद्वात्मक संघर्ष के सर्वथा विपरीत सिंदान्त है।

यह खाध के विषय से परे है, गांधी जी कहते है कि एक मांसाहारी अहिंसक हो सकता है और एक व्यापारी जो झूठ बोलता है, ग्राहको को ठगता है, वह उस मांसाहारी से अधिक हिंसक है।''

पंचायती राज एवं सर्वोदय संबंधी में विचारो के अन्तर्गत गांधी जी पंचायती राज को सत्ता के विकेन्द्रीकरण और व्यापक राजनीतिक भागेदारी के लिए आवश्यक मानते थे इसे गांधी जी ने धरातलीय प्रजातंत्र की संज्ञा दी और कहा ''पंचायती व्यवस्था से ग्रामीण स्तर तक का व्यापक विकास किया जा सकता है। तथा गरीब से गरीब लोगो को राजनीतिक स्वतंत्रता का एहसास कराया जा सकता है। इस व्यवस्था से सत्ता एवं शक्ति एक हाथ में केन्द्रित न होकर अनेक हाथो में विभाजित हो जाएगी। इससे निरंकुशता तानाशाही का राज समाप्त हो जाएगा।

भारत जैसे गांवो के देश में गांधी के पंचायती राज संबंधी विचार को बहुत हद तक अपनाया गया है।

आधुनिक समाज में गांधी जी के सामाजिक विचारो का मसलन अस्पृश्यता का अंत, साम्प्रदायिक व जातीय एकता पर बल, स्त्री सुधार व मघ–निषेध का प्रयास काफी उपयोगी है। इन्होंने असत्य, हिंसा और अनैतिकता को मिटाकर सत्य और अहिंसा पर आधारित आदर्श समाज की वकालत की जो आज भी उपयोगी और प्रासांगिक है, हालांकि इन्होंने स्त्री स्वतंत्रता को घर तक सीमित किया, जबकि आज जीवन के तमाम क्षेत्रों में स्त्रियों की समान भागेदारी दी जा रही है, इनके बुनयादी शिक्षा संबंधी विचार का कोई खास उपयोगिता वर्तमान में नहीं रह गयी है, गांधी जी के राजनीतिक एवं सामाजिक विचार के भांति गांधी के आर्थिक विचार भी मानवीय व नैतिकता से परिपूर्ण मूल्य पर आधारित हैं इनका कहना था कि सच्चा अर्थशास्त्र नैतिकता के महान नियमों के प्रतिकुल हो ही नहीं सकता, सच्चा अर्थशास्त सामाजिक न्याय चाहता है, वह प्रत्येक व्यक्ति का यहॉ तक की दुर्बल व्यक्ति का भी सामाजिक न्याय चाहता है, और जो अच्छे जीवन के लिए आवश्यक है।

गांधी जी आर्थिक उत्पादन संबंधी कार्यो में तमाम लोगों को जोड़ते है, इनका कहना है कि सभी को कुछ न कुछ रोटी के लिए श्रम करना चाहिए चाहे वह डॉक्टर, प्राध्यापक व वकील जैसा मानसिक परिश्रम करने वाला क्यों नहीं हो ?

गांधी जी बड़ी मशीनों को मानव जाति के लिए अभिशाप मानते थे और वे मानते थे कि समाज में घृणा, द्वेष और स्वार्थ में जो वृद्वि हुई वह सब मशीनी सभ्यता का ही परिणाम है।

गांधी जी ने औधोगिकरण का विरोध करते हुए कुटीर उधोग–धंधो पर आधारित एक ऐसी विकेन्द्रित अर्थव्यस्था का प्रतिपादन किया है, जिसके अन्तर्गत प्रत्येक गांव एक आर्थिक इकाई के रूप में कार्य करेगा। वे खादी को भारत की राजनीतिक एवं आर्थिक समस्याओं का पूर्ण हल मानते थे और उनके द्वारा आर्थिक क्षेत्र में स्वदेशी के विचार का प्रतिपादन किया है।

गांधी जी के विचारो के प्रधान स्त्रोत – गांधी जी का सबसे प्रिय भजन (नरसी मेहता कृत) वैष्णव जन तेने कहिए जो परि पराई जाणे रे''

गांधी जी के विचारो के प्रधान स्त्रोतो को दो भागों में बांटा जा सकता है, पूर्वी और पश्चिमी।

पूर्वी स्त्रोतो में इन्हें अपनी माता जी से प्राप्त वैष्णव हिन्दू धर्म के प्रभाव, जैन और बौद्व धर्म, उपनिषद् एवं भारत के विभिन्न साधु संतो की वाणियो को शामिल किया जा सकता है।

गांधी जी ने लिखते है ''उन्होंने सत्य और अहिंसा का पाठ जैन और बौद्ध दर्शन से ग्रहण किया है। भागवत गीता का प्रभाव गांधी जी पर सर्वोपरि था। इसे यह आध्यात्मिक संदर्भो की पुस्तक कहते थे।

पश्चिमी स्त्रोतो में बाइबिल (विशेषकर उसका पर्वत प्रवचन), टालस्टाय, रस्किन, तथा थोरो। गांधी जी ने जॉन रस्किन की पुस्तक (Unto this last) का सर्वोदय के नाम से गुजराती में अनुवाद किया।

टालस्टाय की पुस्तके – Gospel in Brief, What to do, The Kingdon of God is within you

तथा थोरो की पुस्तक ''on the duty of civil disdselience" इन सभी का गांधी जी पर व्यापक प्रभाव पड़ा और ये सभी इनके विचारो के प्रेरणा स्त्रोत बन गये।

गांधी जी का जीवन दर्शन चिंरजीवी है। और भारतीय दर्शन का सार है, जिसमें सत्य और अहिंसा के द्वारा जीवन की रहस्यमय गुत्थियाँ सुलझती है यदि यह कहा जाए तो अत्युक्त न होगा कि आज भी गांधी दर्शन हर कोण से उपयोगी तथा प्रासंगिक है।

गांधी जी का अहिंसा का विचार अद्वितीय है, उन्होंने अहिंसा के व्यक्तिवादी नैतिक आधार को सामाजिक आधार प्रदान किया। इनका मानना था अहिंसा केवल व्यक्ति का धर्म ही नहीं है, इसकी व्याप्ति राजनीति, अर्थनीति, शिक्षा, विज्ञान आदि सभी क्षेत्रों में होनी चाहिए। न्यूनतम मात्रा में भी सामाजिक न्याय हिंसा से प्राप्त नहीं किया जा सकता। संसार में मानवता का अस्तित्व सत्य और अहिंसा के कारण है। अहिंसा का तात्पर्य है, सभी प्राणियों के प्रति द्वेष का संपूर्ण अभाव। अर्थात सभी जीवो के प्रति समभाव रखने का कार्यान्वित रूप ही अहिंसा है।

गांधी जी का लिखते है – ''मेरे विचार से जनतंत्र उसे कहते है जिससे कमजोर से कमजोर को भी वही अधिकार और अवसर मिले जो सबसे शाक्तिशाली को प्राप्त होता है। ऐसा केवल अहिंसा के द्वारा ही संभव है।

अहिंसा का अर्थ है, अनंत प्रेम और प्रेम का अर्थ है कष्ट सहने की असीम क्षमता तथा हिंसा घृणा का घर है।

सत्य और अहिंसा गांधीजी के जीवन दर्शन के आधारभूत स्तंम्भ है गांधी दर्शन स्वयमेव सत्य की अभिव्यक्ति है।

गांधी जी दार्शनिक थे और उसके जीवन का सबसे बड़ा गुण यह था कि जो आदर्श उनसे हृदय में घर कर लेता था उसे वह व्यवहारिक जीवन में उतारते थे, और स्वंय अनुभव प्राप्त कर लेते थे बाद ही दूसरो के सम्मुख रखते थे।

RRIJM 2015, All Rights Reserved

गांधी जी लिखते है – मैं दूसरो को अपना जीवन दर्शन समझाने के सर्वथा अयोग्य हूँ मैं तो केवल उस दर्शन को जिसमें विश्वास रखता हूँ, व्यवहार ये लाने की योग्यता रखता हूँ।

वस्तुतः गांधीदर्शन जीवन साधाना है, गांधी जी के लिए न कोई काम छोटा था, न बड़ा, कर्म उनके लिए पूजा था, स्वाधीनता का प्रयोजन उनके लिए केवल उतना था कि मानव बंधनयुक्त रहे और सच्चाई के साथ अपना कर्त्तव्य कर्म करते हुए उस पथ का अनुगमन करे जिस पर चलकर आत्मा–परमात्मा बन जाती है।

गांधी जी का कहना था कि ''एक सच्चे सत्याग्रही को इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि भले ही उसका आदर हो या न हो। पर उसे ऐसा कुछ नहीं करना चाहिए जिससे विरोधी के मन में घृणा पेदा हो।''

गाँधीवाद समाज की रीढ़ व परिवर्तन का माध्यम है, उसी प्रेम और विश्वास पर गांधी का राम–राज्य टिका रहता है, गांधी जी का प्रेम, मार्क्सवादी तलवार से ज्यादा शक्तिशली व त्रिव है, जिसे गांधीवादियों द्वारा परिवर्तन का माध्यम बनाया जाता रहा है, गांधीजी का प्रेम व्यापक व प्रभावकारी है, जिससे व्यक्तिगत स्तर से अर्न्तराष्ट्रीय स्तर तक का परिवर्तन बहुत ही आसानी एवं शान्तिपूर्ण तरीके से किया जा सकता है, गांधीवाद मार्क्सवाद एवं उदारवाद की तरह एक वर्ग विशेष की विचारधारा न होकर समाज के तमाम लोगों के लिए एक मानवतावादी विचारधारा है, क्योंकि गांधीवाद का लक्ष्य सर्वोदय है।

गांधीवाद अमीरो के नैतिक विकास और गरीबों के आर्थिक विकास में रूचि रखने वाला न्यायोचित, विचारधारा है, गांधीवाद वर्ग संघर्ष नहीं, वर्ग, समन्वय की वकालत करने वाली मानवोचित विचारधारा है।

डॉ0 स्टेनले जोन्स ने लिखा है कि –''हत्थारे की गोलियॉ महात्मा गांधी की और उनके विचारों का अंत करने के लिए चलायी परंतु अनका फल यह हुआ कि वे विचार स्वछंद हो गये और मानव जाति में धाती बन गये। हत्थारे ने महात्मा गांधी की हत्या करके उन्हें अमर बना दिया। मृत्यु से वे अपने जीवन की अपेक्षा अधिक बलशाली हो गये।''

गांधी जी के समस्त विचारों को देखने के बाद यह कहा जा सकता है कि इनके विचार मानव जाति के लिए अमूल्य धरोहर के समान है। गांधी जी विश्वबंधुत्व का समर्थन करने वालों में वे एक थे। जिससे समस्त मानव जाति का कल्याण हो सके।'' गांधी जी ने कोरा दार्शनिक बनने के स्थान पर कर्मयोगी होने को महत्व दिया।

गांधी जी ने अन्याय व अत्याचार के विरूद्ध अहिंसा का प्रयोग ''सत्याग्रह'' के रूप में किया।

राधाकृष्णन लिखते है – ''ऐसे संसार में जो घृणा में प्रमत्र है, सदभावहीनता के कारण खंडित है, गांधी प्रेम और सदभाव के अमर प्रतीक है, वह इतिहास में युगो–युगो से जुड़े है।

संदर्भ सूची :–

1. सत्य के साथ मेरे प्रयोग (आत्मकथा–गाँधीजी) :– साहित्य मंडल, कनॉट सर्कस, नई दिल्ली–110001
2. सत्य ही ईश्वर है–(गाँधीजी) :– आर0के0 प्रभु (संपादक)–नवजीवन प्रकाशन मंदिर अहमदाबाद–380014
3. गांधी दर्शन–यशपाल जैन, साहित्य मंडल प्रकाशन, नई दिल्ली–110001
4. सर्वोदय (गाँधीजी)–(संपादक) भारतन् कुमारप्पा, नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद–14
5. गांधी आख्यान माला I एवं II – विष्णु प्रभाकर (संपादक) साहित्य मंडल प्रकाशन नई दिल्ली–110001
6. हिन्द स्वराज्य (महात्मा गांधी का जीवन दर्शन)–कालिका प्रसाद (अनुवादक) साहित्य मंडल प्रकाशन, नई दिल्ली–110001
7. गांधी की कहानी–लुई फिशर–साहित्य मंडल प्रकाशन, नई दिल्ली–110001
8. भारत गांधी के बाद–रामचंन्द्र गुहा
9. मैं महात्मा नहीं हूँ (गांधीजी) अनुपादक–विष्णु प्रभाकर, साहित्य मंडल प्रकाशन, नई दिल्ली–110001
10. महात्मा गांधी–रोमेन रोलेंड, विशप बुक्स प्राईवेट लिमिटेड
11. गांधी कथा–उमाशंकर जोशी, नवजीवन प्रकाशन मंदिर अहमदाबाद–370014
12. कुरूक्षेत्र–मासिक पत्रिका (जुलाई 2018)–पंचायती राज
13. राजनीति सिंदान्त की रूपरेखा, ओम प्रकाश गाबा (नई दिल्ली)
14. राजनीति विज्ञान (UGC-NET)–सुरेन्द्र कोशिक, (उपकार प्रकाशन, आरा–2)
15. राजनीतिक विचारक विश्वकोश–ओम प्रकाश गाबा, नई दिल्ली।

RRIJM 2015, All Rights Reserved